- **भूमिका :**

अहिन्दी भाषी प्रदेशो में हो रहे 'शोध प्रबंध' कार्य हिन्दी की श्रीवृद्धि कर रहे है। ऐसे कार्यो का स्तर निःसंदेह संतोषप्रद है। गुजरात के अलग–अलग क्षेत्रों में भी ऐसे कार्य हो रहे है। शेठ पी. टी. महिला कॉलेज में अध्यापन और अध्ययन कार्य करते–करते हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार श्री निर्मल वर्माजी के निबंधों का अध्ययन किया उसके प्रति में आकर्षित हुआ, क्योंकि निर्मल वर्मा के निबंधों में धर्म है, दर्शन है, व्यवहार ज्ञान तथा उपदेश है और इन सबके केन्द्र में है मानव, जिसमें प्रतिदिन संस्कारों की कमी होती जा रही है, स्वार्थ लोलुपता बढ़ती जा रही है, भौतिक सुखों को रातोरात प्राप्त करने की अभिलाषा ने उसे स्वार्थी, ईष्यालु, दंभी तथा लालची बना दिया है।

निर्मल वर्मा इन निबंधों के माध्यम से समाज को सुख और शांतिमय होने की प्रेरणा देते हैं। उपरोक्त सभी निबंध संकलनों में धर्म, दर्शन, न्याय, शिक्षा, मानव–मूल्य, समाज, नीति नियम, कानून, परंपराएँ, हिंसा, आतंक, राजनीति, संस्कृति तथा मानव–मन और उसके स्वभावगत विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति हुई है। भविष्य में मेरा यह 'शोध निबंध' समाज तथा शिक्षा के लिए उपयोगी होगा। जिस प्रकार शरीर में खून का बहाव शुद्ध और अविरत होना चाहिए, इसी तरह साहित्य से मानव का जीवन पवित्र रहेता है। इसलिए मैं इस शोध–कार्य का प्रारंभ करना चाहता हूँ।

हिन्दी निबंधों का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। निबंध साहित्य की एक नयी विधा है और पत्र–पत्रिकाओं के बढते प्रसारने इस विधा को भी लोकप्रिय बनाने में मदद पहुँचाई है। हिन्दी निबंध की शुरूआत उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से मानी जाती है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उसके समय में कई अन्य महत्त्वपूर्ण लेखको ने अपने विचारो को व्यक्त करने के लिए इस विधा का सहारा लिया।

व्यक्तिनिष्ठता निबंध की प्रमुख अनिवार्यता है, जिसमें व्यक्ति के विचार और भाव मस्तिष्क और ह्रदय चिन्तन और अनुभूति दोनों पक्ष आ जाते है अर्थात् इसमें विषय और व्यक्ति दोनों सहज समन्वित होकर आते है। विषय के प्रति चिन्तनात्मक या विचारात्मक दृष्टिकोण प्रधान निबंधों को विचारात्मक निबंध कहते हैं। समग्रतः आत्मनिष्टता के लिए हुए किसी विषय के प्रति विचारात्मक या चिन्तन प्रधान नजरिए को विचारात्मक निबंध कहते हैं। विचारात्मक निबंधों में जहाँ विषय का ज्ञान अपेक्षित हैं। चिन्तनपरम इन निबंधों में विचार भावुकता का बाना पहने हुए है।

- **शोध निबंध की मौलिकता :**

आदिमानव से शुरूआत करके मानव की यात्रा आज आधुनिक मानव तक पहुँची है। कच्चा मांस खाकर घुमनेवाला मानव फालतु जीवन जीता हुआ, मानव आज एक ही स्थल पर तरह–तरह के पकवान खा रहा है। फालतु जीवन जीता मानव आज एक स्थल पर स्थिर हो कर दुनिया के विविध देशों की मुलाकात ले रहा है। वर्षों से शुरू हुई उसकी यह विकास यात्रा अनेक हिस्से में से गुजर कर चरम सीमा तक पहुँच चुकी है। जीवन जीने के लिए जरूरी चीजों को प्राप्त करने के लिए तकलिफें सहनेवाला मनुष्य आज क्या खाना है ? क्या पहनना है ? जैसे प्रारंभिक प्रश्नों से दुःखी है। इतना अधिक विकास के पश्चात् वही प्रश्नों अलग–अलग संदर्भ में उसके सामने मौजूद है। लगातार विकास और विस्तार के कारण आज वह बहुत तनाव युक्त जीवन जी रहा है।

उपरोक्त सभी निबंध संकलनों में धर्म, दर्शन, न्याय, शिक्षा, मानव–मूल्य, समाज, नीति–नियम, कानून, परंपराएँ, हिंसा, आतंक, राजनीति, संस्कृति तथा मानव मन और उसके स्वभावगत विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति हुई है।

- **निबंध शब्द का अर्थ और परिभाषा :**

इन विज्ञानिक चिन्तन और विश्लेषण–प्रधान लेखों के लिए ही साहित्य के क्षेत्र में निबंध शब्द का प्रयोग किया है। निबंध का शाब्दिक अर्थ है बाँधना। प्राचीन समय में आजकल के साधन सम्पन्न मुद्रण यंत्रों का अभाव था और कागज आदि की सुविधा प्राप्त न थी, लोग अपने विचारों को भोज पत्रों पर लिखकर उन्हें पुस्तक के रूप में बाँध देते थे। इन बाँध ने की क्रिया को ही निबंध या प्रबन्ध कहा जाता था। शनैः यह शब्द अपना अर्थ परिवर्तित करता गया और उसका अर्थ एक ऐसा लेख जिस में कि अनेक विचारों, मतों या व्याख्याओं का सम्मिश्रण या ग्रन्थन हो। जैसा कि नागरि प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्द सागर' में इस शब्द का अर्थ लिखा है : 'बन्धन वह व्याख्या है, जिसमें अनेक मतों का संग्रह हो।'

- **निबंध विधा की महत्ता :**

आज हिन्दी में निबंध शब्द का प्रयोग उसी अर्थ में किया जाता है जिस अर्थ में 'एसे' (Essay) शब्द का अंग्रेजी में। 'एसे' शब्द का अर्थ प्रयास या प्रयत्न है। सुप्रसिद्ध फ्रेंच लेखक मोनतेन (Montaigne) ने सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग किया। उसके अनुसार 'एसे' वैयक्तिक विचार या अनुभूति को एक कलात्मक सूत्र में पिरो देने का ही प्रयत्न मात्र है। परंतु मोनतेन की रचनाओं में विश्रृंखलता है, उनमें अभिव्यक्त विभिन्न विचारों में सम्बद्धता नहीं। उनमें वैयक्तिक, रूचि, भाव और अनुभूति की प्रधानता होती है। अपनी रचनाओं के विषय में मोनतेन का यह कथन है, यह मेरी अपनी भावनाएँ है, इनके द्वारा मैं किसी नवीन सत्य के अन्वेषण का दावा नहीं करता, इनके द्वारा मैं अपने आपको पाठकों की सेवा में समर्पित करता हूँ। वस्तुतः निबंध निबंधकार के व्यक्तित्व की प्रधानता को सिद्ध करता है।

- **शोध निबंध के विषय की रूपरेखा :**

इस शोध निबंध के आयोजन की रूपरेखा निम्नलिखित है।

प्रथम अध्याय	:	निर्मल वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
द्वितीय अध्याय	:	निर्मल वर्मा के निबंधों का शिल्पगत विधान
तृतीय अध्याय	:	निर्मल वर्मा के निबंधों का कथ्यगत विश्लेषण
चतुर्थ अध्याय	:	हिन्दी निबंध साहित्य में निर्मल वर्मा का स्थान
	–	उपसंहार

प्रथम अध्याय

निर्मल वर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रख्यात कथाकार एवम् चिन्तक श्री निर्मल वर्मा हिन्दी के अग्रणी बुद्धिजीवी थे। उन्होंने हिन्दी को एक नयी कथा–भाषा दी हैं एक नवीन।

युरोप से लौटने के पश्चात् सन् १९७७ में इन्डियन इन्स्टीट्यूट ओफ एडवान्स्ड स्टडीज (शिमला) में फला रहे और मिथक चेतना पर कार्य किया। सन् १९७७ में इण्टर नेशनल राइटींग प्रोग्राम, आयोवा (अमेरिका) में आप सम्मिलित हुए।

निर्मल वर्मा के अब तक प्रकाशित कृतियाँ निम्नलिखित है।

- **निर्मल वर्मा का व्यक्तित्व :**

जन्म : निर्मल वर्मा के पिता श्री नंदकुमार वर्मा मूलतः पंजाब के रहनेवाले थे। नंदकुमारजी पटियाला से बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद लाहौर के चीव्स कॉलेज में

वार्डन नियुक्त हुए। निर्मल वर्मा की माता पूरानी दिल्ली में नीम का कटरा (चाँदनी चौक) के खत्री परिवार से थी। इन दिनों भारत पर अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेज शासक दिल्ली की गर्मियों से बचने के लिए गर्मियों में शिमला चले जाते थे।

बचपन : बड़े परिवार में जन्म होने के बावजूद निर्मल का बचपन काफी लाड़–प्यार से बीता। निर्मल के परिवार की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी थी इसलिए निर्मल को बचपन में कभी अभावों का सामना नहीं करना पड़ा।

शिक्षा : आपके पिता सरकारी दफ्तर में कर्मचारी थे। घर की अवस्था ठीक थी न गरीब, न अमीर, एक औसत मध्यमवर्गीय परिवार में आपका बचपन बीता। अधिकांश भाग पहाडों में ही बीता। दिल्ली विश्व विद्यालय के सुप्रसिद्ध कॉलेज सेन्ट स्टीफन्स से इतिहास विषय के साथ एम. ए. किया। वही आपने कुछ वर्ष अध्यापन कार्य किया। मार्क्सवादी विचारधारा से अत्याधिक प्रभावित होने के कारण आप भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने परंतु हंगेरी में हुई घटना पर मतभेद होने के कारण आपने त्यागपत्र दे दिया। सन् १९५९ में प्राग, चेकोस्लाविया के प्राच्य विद्या संस्थान और चेकोस्लाव लेखक संघ द्वारा निमंत्रण मिलने पर वहाँ सात साल रह कर अनेक चेक उपन्यासों एवम् कहानियों का अनुवाद किया।

निर्मल के लिए साहित्य जितना अर्थ रखता था, उतनी ही राजनीति भी। यही वजह है कि वे साम्यवादी दल से सम्बद्ध हो गये। इसके बारे में उनका कहना है कि, “मार्क्सवाद में सबकी समानता, सबकी बराबरी की बातों ने मुझे काफी प्रभावित किया।”

पहली कहानी : निर्मल ने अपनी पहली कहानी १४–१५ साल की उम्र में लिखी। अपनी कश्मीर यात्रा के अनुभवों के आधार पर लिखी गई। इन दोनों कहानियों को प्रकाशन किसी भी पत्रिका में नहीं हो सका। निर्मल की किसी कहानी का पहली बार प्रकाशन सेंट स्टीफेन्य कॉलेज की पत्रिका में हुआ। सार्वजनिक तौर पर निर्मल वर्मा की पहली कहानी १९५३ में प्रकाशित हुई।

इस साल हैदराबाद से बद्री विशाल पित्ती द्वारा प्रकाशित 'कल्पना' में निर्मल की कहानी 'रिश्ते' का प्रकाशन हुआ। १९५८ में अमृतराय के संपादन में निकले 'हंस' के अर्धवार्षिक संकलन में 'परिन्दे' का प्रकाशन हुआ। 'परिन्दे' की हिन्दी कथा–जगत में काफी चर्चा हुई।

विवाह : निर्मल की मान्यता है कि लेखक की पहचान उसके रचना कर्म से की जानी चाहिए। पाठकों द्वारा लेखक की व्यक्तिगत जिन्दगी में रूचि लेना उचित नहीं है। अपनी जिन्दगी की तरह अपने परिवार के बारे में भी निर्मल नहीं के बराबर बोलते है। स्वयं निर्मल अपनी व्यक्तिगत जिन्दगी के बारे में अधिक कुछ बताने से कतराते है। इसलिए निर्मल के विवाह व परिवार के बारे में अधिक जानकारी नहीं मिल सकी है। स्वयं द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार उनका विवाह १९६४ में हुआ। इस विवाह से निर्मल एक लड़की के पिता है।

विदेश प्रवास : १९५१ में दिल्ली विश्व विद्यालय में इतिहास में एम. ए. करने के बाद निर्मल वर्मा दिल्ली के सेंट स्टीफेन्य कॉलेज में इतिहास के व्याख्याता नियुक्त हुए। निर्मल ने कुछ साल कॉलेज में अध्यापन किया। इधर अध्यापन के साथ–साथ निर्मल का लेखन कार्य भी जारी था। धीरे–धीरे लेखक के रूप में निर्मल की पहचान बनने लगी।

स्वदेश वापसी : १९७१ में निर्मल युरोप से भारत लौटे। भारत लौटने पर निर्मल फैलो के रूप में 'इन्डियन इंस्टीटयूट ऑफ एडवान्स स्टडीज शिमला' से सम्बद्ध हुए। यहाँ आपने दो साल तक 'मिथक चेतना' विषय पर शोध कार्य किया। १९७७ में निर्मल 'इन्टरनेशनल राइटिंग प्रोग्राम' आयोवा (अमरीका) में सम्मिलित हुए। १९७३ में कुमार साहनी ने निर्मल वर्मा की कहानी 'माया दर्पण' पर एक फिल्म का निर्माण किया। इस फिल्म को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म का पुरस्कार मिला।

पुरस्कार व सम्मान : निर्मल वर्मा का लेखन गंभीर चिन्तन व रचनात्मक उत्कृष्टता का परिणाम है। इसी श्रेष्ठता के कारण निर्मल के लेखन का सम्मान हुआ है। १९७३ में निर्मल की

कहानी ‘माया दर्पण’ पर कुमार साहनी ने फिल्म बनाई। १९८७ में निर्मल को सम्मान स्वरूप बी. बी. सी. ने ‘जीवन और कृतित्व’ पर फिल्म का प्रसारण किया। १९८९ में आपको उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की ओर से सम्मानित किया गया। १९९३ में मोहनलाल केड़िया हिन्दी साहित्यन्यास की ओर से ‘साधना सन्मान’ से विभूषित किया गया।

अभिरुचियाँ : रमेशचन्द्र शाह को दिये साक्षात्कार में निर्मल वर्मा ने एक बार कहा था, “मैं संवेदनशीलता के अपने इलाके को जानता हूँ। मेरे पास केवल मध्यवर्ग का नगरीय जीवन हैं। जो लोग गाँव के जीवन के, गाँव यथार्थ बोध के बारे में लिखते हैं, उनसे मुझे कोई अर्न्तविरोध महसूस नहीं होता।”

- **कृतित्व :**

यात्रा वर्णन एवम् संस्मरण :

(१) चीड़ों पर चाँदनी
(२) हर बारिस में

निबंध संग्रह :

(१) शब्द और स्मृति
(२) कला का जोखिम
(३) ढलान से उतरते हुए
(४) भारत और युरोप : प्रतिश्रुति के क्षेत्र
(५) दूसरे शब्दों में
(६) शताब्दी के ढलते वर्षों में
(७) आदि, अन्त और आरंभ

कहानी संग्रह :

(१) परिन्दे
(२) जलती झाड़ी
(३) पिछली गर्मियों में
(४) बीच बहस में
(५) मेरी प्रिय कहानियाँ
(६) कव्वे और कालापानी
(७) सुखा तथा अन्य कहानियाँ

उपन्यास :

(१) वे दिन
(२) लाल टीन की छत
(३) एक चिथड़ा सुख
(४) रात का रिपोर्टर
(५) अन्तिम अरण्य

नाटक : (१) तीन एकांत

डायरी : (१) धुँध से उठती धुन

अनुवाद : (१) कुप्रीन की कहानियाँ
(२) कारेल चापेक की कहानियाँ
(३) इतने बड़े धब्बे (सात चेक कहानियाँ)
(४) झोंपडेवाले (रूमनियन कहानियाँ)
(५) हिल स्टेशन (कहानियाँ)

अनुवाद :

(१) रोम्यो जूलियेट और अन्धेरा (उपन्यास)

(२) बाहर और परे (उपन्यास)

(३) हर्शीफीड (उपन्यास)

(४) एमेक की गाथा (उपन्यास)

(५) जोसेफ श्कवोरेस्की, आर. यू. आर (नाटक)

(६) डेज ऑफ लांगिग (उपन्यास)

- **यात्रा वर्णन एवम् संस्मरण :**

निर्मल वर्मा ने यात्रा वर्णन के रूप में 'चीड़ों पर चाँदनी' और 'हर बारिस' नामक दो ग्रन्थ हिन्दी साहित्य को दिये हैं। निर्मल का यह यात्रा वर्णन न केवल स्थूल यात्रा वर्णन है बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और साहित्यिक यात्रा भी है। इन यात्रा संस्मरणों के संदर्भ में प्रकाशक का वक्तव्य देखने योग्य है – "बीसवीं शती के स्मारक चिन्ह की खोज में एक भारतीय लेखक के यह संस्मरण अपने आपको खोजने का प्रयास है। अपने से बाहर निकल कर स्वयं अपने आपको खोजने का प्रयत्न और इसलिए ये संस्मरण एक व्यक्ति का निजी टेस्टामेण्ड भी है।"

'चीड़ों पर चाँदनी' के तीन विभाग में कुल बारह यात्रा वर्णन शामिल है – (१) 'उत्तरी रोशनियों की ओर' में 'ब्रेख्त और उदास नगर', 'रोती हुई मर्मेड़ का शहर', 'उत्तरी रोशनियों की ओर' तथा 'सफेद रातें और हवा', 'चीड़ों पर चाँदनीं' (२) 'देहरी के बाहर' में – 'लैक्सनेस', 'एक इन्टरव्यू', 'काफका और चापेक', 'समकालीन चेक साहित्य' तथा 'देहरी के बाहर', 'चेखव के पत्र'।

'हर बारिस में' कुल ग्यारह संस्मरणात्मक निबंध संकलित है। 'केन्द्रीय मानवीय स्थिति दो संस्कृतियों के बीच', 'युरोप में भारतीय अंग्रेजों की खोज में', 'अंधेरे में', 'एक चीख', 'प्राग का आधुनिक रंगमंच', 'प्राग एक स्वप्न', 'अंधेरे के खिलाफ', 'परम्परा और प्रतिबद्धता एक बातचीत', 'रोब्ब ग्रिये के साथ एक शाम' तथा 'सौंदर्य की छायाएँ'।

- **निबंध संग्रह :**

'शब्द और स्मृति' में कुल बारह निबंध संकलित हैं। 'सृजन में सौन्दर्य और नैतिकता', 'साहित्य और लेखक की आस्था', 'सृजन प्रक्रिया और मूल्यांकन', 'सम्प्रेषण का संकट', 'संस्कृति', 'समय और भारतीय उपन्यास लेखक और समाज व्यवस्था', 'अतीत एक आत्म मंथन', 'गद्य का पतन', 'साहित्य सिनेमा', 'सही रिश्ते की पहचान', 'तीन एकांत : एक अनुभव में कहीं भटक गया हूँ', 'लंडन में बोर्गेस' तथा 'पत्थर और बहता पानी'। इन में से अधिकांश निबंध वर्माजी ने शिमला निवास के दौरान लिखे थे। इन निबंधों का स्वर गैरआधुनिक है। इसके सम्बन्ध में वर्माजी का कहना है – "इन निबंधों को मैं गैरआधुनिक कहना, चाहूँगा, क्योंकि इनमें आधुनिकता के उन अंधविश्वासों, रूढ़िगत फैशनों और फार्मला पर शंका प्रगट की गई है, जिन्हें हम आँख मूँदकर स्वीकार कर लेते हैं।

'कला का जोखिम' : इस संग्रह के निबंधों को तीन विभागों में बाटा गया है। 'रचना–चिन्तन' प्रथम विभाग में 'कला', 'मिथम और यथार्थ परम्परा और इतिहास बोध', 'रचना की जरूरत', 'साहित्य में प्रासंगिकता का प्रश्न' तथा 'संवाद की मर्यादाएँ' तथा द्वितीय विभाग में 'रेणु : समग्र मानवीय दृष्टि', 'अज्ञेय : आधुनिक बोध की पीड़ा', 'मुक्ति बोध की गद्य कथा', 'हमारे समय का नायक तथा नाबोकोव', 'साहित्य शिक्षक के रूप में' नामक निबन्ध है। संग्रह के तीसरे विभाग को 'रचना यात्रा' नाम दिया गया है। 'सुलगती टहनी' नामक निबंध में कुंभ मेले का यात्रा वर्णन है। इन निबंधों के बारे में स्वयं निर्मलजी का वक्तव्य है – "हमारी दुनिया में कला

का स्थान दिनों–दिन धुंधला, अनिश्चित और संदिग्ध बनता गया है, जो हमारी समझ में कला का सबसे बीहड़ जोखिम है।

'ढ़लान से उतरते हुए' : निर्मल वर्मा का नवीनतम निबंध संग्रह है। इसमें संकलित निबंधों को तीन विभागों में विभाजित किया गया है। प्रथम विभाग 'कला और कृति' में 'कला और सृजन', 'उपन्यास की मृत्यु और उसका पुनर्जन्म', 'कहानी : एक शुद्ध विधा', 'कला और आलोचना की मर्यादाएँ', 'प्रेमचन्द की उपस्थिति' और 'मलयज की मृत्यु पर' नामक निबंध है। दूसरे विभाग का 'अवस्था' नाम रखा गया है। इसमें 'शताब्दी के ढलते वर्षों में', 'धर्म', 'धर्म तंत्र और राजनीति', 'सिंगरोली जहाँ कोई वापसी नहीं'। 'ढ़लान से उतरते हुए', 'क्यों भारतीय संस्कृति को जीवित रखना है' नामक निबंध है। अंतिम और तीसरे विभाग में डायरी के कुछ अंश दिये गये हैं तथा इस विभाग को नाम दिया गया है – 'रास्ते पर'।

'भारत और युरोप : प्रतिश्रुति के क्षेत्र' : 'भारत और युरोप : प्रतिश्रुति के क्षेत्र' निबंध संग्रह का प्रकाशन राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली से सन् १९९१ में हुआ था। प्रस्तुत निबंध संग्रह को सन् १९९७ में भारतीय ज्ञानपीठ के मूर्तिदेवी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 'भारत और युरोप प्रतिश्रुति के क्षेत्र' निर्मल वर्मा का आलोचनात्मक निबंधों का संग्रह है। इसमें उन्होंने साहित्य, समाज एवम् संस्कृति जैसे विषयों पर अपना चिन्तन प्रकट किया गया है। द्वितीय खण्ड में 'संस्कृति के आत्म बिम्ब', 'साहित्यिक कृति और सत्य की अवधारणा', 'कला की प्रासंगिकता', 'क्या साहित्य समाज से कट चुका है ?' आदि।

'दूसरे शब्दो में' : निर्मल वर्मा को 'दूसरे शब्दो' में निबंध संग्रह भारतीय ज्ञानपीठ नयी दिल्ली द्वारा सन् १९९३ में प्रकाशित किया गया था। इस संग्रह को चार खण्डों में विभाजित किया गया है। 'सृजन का परिवेश' शीर्षकवाले प्रथम खण्ड में 'मनुष्य से साक्षात्कार', 'सृजन का परिवेश', 'भाषा और राष्ट्रीय अस्मिता', 'परम्परा बोध में द्वन्द्व', 'इतिहास और आकाश के बीच',

'कलाकृति', 'समाज और आलोचना', 'लेखक की स्वतन्त्रता : आज के संदर्भ में', 'निरंकुशता और दासता के बीच' साहित्यिक निबंध है।

दूसरे खण्ड को 'अस्मिता की खोज' नाम दिया गया है तथा इसमें 'परम्परा को भारतीय संदर्भ', 'बीच की एक राह', 'अस्मिता की खोज' तथा 'समाजवाद का स्वप्न और दुःस्वप्न' नाम के निबंध संकलित है। तीसरा खण्ड 'कुछ टिप्पणियाँ' नाम से हैं। इसमें 'मानसिक गुलामी का शब्द कोश', 'हमारी चुनी हुई .... चुप्पियाँ' तथा 'तिब्बत : संसार का अन्तिम उपनिवेश' नाम के निबंध है। चतुर्थ तथा अन्तिम खण्ड में निर्मल के समय–समय पर लिये गये साक्षात्कार है।

'शताब्दी के ढलते वर्षो में' : निर्मल वर्मा के 'शताब्दी के ढलते वर्षो' में निबंध संग्रह का प्रकाशन राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली द्वारा सन् १९७७ में हुआ था। इस संकलन में निर्मल के २९ निबंध संकलित है। प्रस्तुत संग्रह तीन खण्डों में विभाजित है। जैसे – 'कला', 'साहित्य', बसृजन कर्म' नाम के प्रथम खण्ड में दस निबंध हैं। 'समाज संस्कृति आधुनिक युग बोध' नाम के दूसरे खण्ड में नौ निबंध संकलित है।

तीसरे खण्ड में निर्मल के संस्मरण – 'चीडों पर चाँदनी' तथा 'हर बारिश में' प्रकाशित यात्रा विचार लेख हैं।

'आदि, अन्त और आरंभ' : 'आदि, अन्त और आरंभ' निर्मल वर्मा का नवीनतम निबंध संग्रह है। इस का प्रकाशन सन् २००१ में राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली द्वारा किया गया है।

- **उपन्यास :**

'वे दिन' : 'वे दिन' निर्मल वर्मा का पहला उपन्यास है। यह उपन्यास १९६४ में राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। नवीन संवेदना और आधुनिकता को उजागर

करनेवाले इस उपन्यास के प्रकाशन को हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण मोड माना गया है। आलोचक डॉ. इन्द्रनाथ मदान लिखते हैं – "यदि 'गोदान' को हिन्दी उपन्यास का पहला मोड मान लिया जाये तो 'शेखर : एक जीवनी' इस का दूसरा मोड़ और 'वे दिन' इसका तीसरा मोड़ होने की गवाही देता है।

'लाल टीन की छत' : वर्माजी का द्वितीय उपन्यास है। इसका प्रकाशन राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से सन् १९६४ में हुआ। प्रस्तुत उपन्यास में अकेली लड़की काया की कथा है जो एक पहाड़ी शहर शिमला में रहती हे।

'एक चिथड़ा सुख' : 'एक चिथड़ा सुख' निर्मल वर्मा का तीसरा उपन्यास है जो १९७९ ई. में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास आधुनिक नवयुवकों की कथा है जो अपनी भावनाओं से संघर्ष करते हैं, जिसमें झलते है और अनाम ही बीत जाते हैं। मानसिक तनाव का यथार्थ चित्रण है जिसमें पड़कर आदमी प्रायः टूट जाता है।

'रात का रिपोर्टर' : निर्मल वर्मा का चौथा उपन्यास 'रात का रिपोर्टर' १९९४ में आया। उपन्यास क्या है–राजनीति की काली आँधी के शिकार एक सज्जन बुद्धिजीवी रिशी के मानसिक संकट का सघन वृत है।

'अन्तिम अरण्य' : मानव जीवन के अन्तिम प्रहर का यथार्थ : 'अन्तिम अरण्य' निर्मल वर्मा का अन्तिम प्रकाशित उपन्या है जो अपने कथ्य, अनुभूति और संवेदना के स्तर पर नया आस्वाद देता है।

- **कहानी संग्रह :**

'परिन्दे' : 'परिन्दे' निर्मल वर्मा का पहला कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह का प्रकाशन १९६४ में हुआ। राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित इस संग्रह के प्रकाशन के साथ ही

निर्मल वर्मा नयी कहानी के प्रवर्तक कथाकार माने जाने लगे। 'परिन्दे' में कुल सात कहानियाँ – 'डायरी का खेल', 'माया का मर्म', 'तीसरा गवाह', 'अंधेरे में', 'पिक्चर पोस्टकार्ड', 'सितम्बर की एक शाम व परिन्दे' हैं।

'जलती झाड़ी' : 'जलती झाड़ी' निर्मल वर्मा का दूसरा मौलिक कहानी संग्रह है, जो १९६५ ई. में प्रकाशित हुआ था। 'जलती झाड़ी' कहानी संग्रह में कुल दस कहानियाँ संकलित हैं – 'लवर्स', 'माया', 'दर्पण', 'एक शरूआत', 'कुत्ते की मोत', 'पहाड़', 'पराये शहर में', 'जलती झाड़ी', 'दहलीज', 'लन्दन की एक रात' और 'अन्तर'। इनमें से कुछ कहानियाँ तो काफी चर्चित रही हैं, जैसे 'माया दर्पण', 'जलती झाड़ी', 'लन्दन की एक रात', 'अन्तर' इत्यादि।

'पिछली गर्मियों में' : 'पिछली गर्मियों में' निर्मल वर्मा का तीसरा कहानी संग्रह है। १९६८ में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित इस संग्रह में कुल आठ कहानियाँ हैं – 'धागे', 'पिता और प्रेमी', 'डेढ इंच ऊपर', 'खोज', 'उनके कमरे', 'अमालिया', 'इतनी बड़ी आकांक्षा' व 'पिछली गर्मियों में' संग्रहीत है। ये कहानियाँ निर्मल की कहानी कला की विविधता का प्रतिनिधित्व करती हैं।

'बीच बहस में' : 'बीच बहस में' निर्मल वर्मा का चौथा कहानी संग्रह है। इसमें चार लम्बी कहानियाँ – 'छुट्टियों के बाद', 'वीक एण्ड', 'दो घर' व 'बीच बहस में' संग्रहीत है।

'कव्वे और काला पानी' : 'कव्वे और काला पानी' निर्मल वर्मा का पाँचवाँ कहानी संग्रह है। राजकमल प्रकाशन से १९८५ में प्रकाशित इस संग्रह में सात कहानियाँ – 'धूप का एक टुकडा', 'दूसरी दुनिया', 'जिन्दगी', 'यहाँ और वहाँ', 'सुबह की सैर', 'आदमी और लड़की', 'कव्वे और काला पानी', 'वह एक दिन के महेमान' है।

'सूखा तथा अन्य कहानियाँ' : 'सूखा तथा अन्य कहानियाँ' निर्मल वर्मा का छट्ठा मौलिक कहानी संग्रह है, जो १९९५ ई. में प्रकाशित हुआ था।

द्वितीय अध्याय

निर्मल वर्मा के निबंधों का शिल्पगत विधान

मनुष्य का सोचना उसकी भाषा में प्रकट होता है। विचारों की अभिव्यक्ति और आदान–प्रदान का मुख्य माध्यम अधिकांशतः भाषा ही रही। लेखक चिंतन या मनन करता है, उसकी अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से करता है और वह भाषागत अभिव्यक्ति ही लेखक के व्यक्तित्व का एवम् रचना का मूल्य निर्धारित करती है। अतः भाषा और शैली का अटूट सम्बन्ध अपने आप प्रस्थापित हो जाता है। पहले भाव और विचार उदित होते हैं, तब उनके अनुकुल भाषा बनती है और तब भाषा की काया में शैली की प्राण–प्रतिष्ठा होती है। इस प्रकार भाव और विचार, भाषा और शैली अन्योन्याश्रित है।

निबंध रचना पर्याप्त मात्रा में हुई है तथा इनकी विभिन्नता भी उतनी ही अधिक है जितनी इनकी संख्या है, फिर भी विद्वानों ने निबंधों के स्थूल रूप से दो प्रकार के आधार खोज निकाले है : (१) विषय के आधार पर और (२) अभिव्यक्ति के आधार पर।

विषय के आधार पर भी निबंधों के दो प्रकार : (१) विषय प्रधान और (२) आत्मप्रधान।

अभिव्यक्ति के आधार पर निबंध के चार भेद किये जा सकते हैं :

(१) विवरणात्मक निबंध

(२) वर्णनात्मक निबंध

(३) विचारात्मक निबंध

(४) भावात्मक निबंध

(१) **विवरणात्मक निबंध :** विवरणात्मक निबंध वे निबंध कहलाते हैं, जिसमें किसी कहानी या घटना का ब्यौरा दिया जाता है। इस प्रकार के निबंध में युद्ध, यात्राओं आदि का विवरण रहता है। इस प्रकार के निबंध की शैली व्यास शैली होती है।

(२) **वर्णनात्मक निबंध :** इस प्रकार के निबंधों में प्राकृतिक दृश्यों अथवा अन्य महत्त्वपूर्ण स्थानों, मोभों आदि का समावेश होता है। इस प्रकार के निबंधों में भी व्यास शैली का ही प्रयोग किया जाता है।

(३) **विचारात्मक निबंध :** इन में बौद्धिक विवेचन की प्रधानता रहती है, इसी कारण इनका सम्बन्ध प्रधानतः बुद्धि से माना गया है। इनमें दर्शन, अध्यात्म, मनोविज्ञान आदि की विवेचना होती है। समास शैली – "दुःख की श्रेणी में प्रवृत्ति के विचार से करुण का उल्टा क्रोध ...." व्यास शैली – "कविता में कुछ न कुछ झूठ का अंश जरूर रहता है।"

(४) **भावात्मक निबंध :** इनमें बुद्धि तत्त्व की अपेक्षा भाव तत्त्व की प्रधानता रहती है, क्योंकि इन का सम्बन्ध भावना अर्थात् हृदय से होता है।

भाषा में शैली का समावेश इस तरह जीवनगत मूल्यों को गहराई से सोचनेवाली आन्तरिक शक्ति और उन्हें सक्षमता से प्रस्तुत करनेवाली भाषा शक्ति द्वारा ही होगा। जहाँ यह नहीं होता, वहाँ या तो चमत्कारपूर्ण शब्दों की बाजीगरी मिलती है या थोथा विवेचन। शैली कदापि एक अलग गुण नहीं, वरन् वह मनुष्य के बौद्धिक तथा मानसिक गुणों का समन्वित योग अथवा प्रतिफल है। सूर्य के प्रकाश वृत्त से जो सम्बन्ध सहस्त्र रश्मियों का होता है, वही इन तत्त्वों का शैली के साथा है।

भाषा निर्मल वर्मा की कथा में 'कर्म' है। वह किस तरह यह 'कर्म' है, इस कथा और उसकी सांस्कृतिक व्यंजनाओं की रचना में यह कर्म किस तरह फलित होता है और इस कर्म की क्या प्रेरणा है – आदि चीजें प्रस्तुत निबंध में हमारे विमर्श का विषय है।

विमर्श की शुरूआत से पहले भाषा का 'कर्म' होना क्या है, इसकी पूर्व पीठिका के तौर पर कुछ स्पष्टीकरण (यद्यपि सम्भव है, वे सर्वविदित तथ्यों की प्रकारान्तर से पुनरावृत्ति मात्र हो) जरूरी है। भाषा को कर्म कहते हुए हमारा आशय भाषा की महज उस भूमिका से नहीं है जो वह किसी भी लेखन रूप की तरह आख्यान में भी निभाती है जिसमें लेखक के 'लिखने' से लेकर आख्यान के कथनों और पात्रों के बोलने–सुनने, लिखने तक वह एक 'माध्यम' का काम करती है।

निबंध रचना पर्याप्त मात्रा में हुई है तथा इनकी विभिन्नता भी उतनी ही अधिक है, जितनी इनकी संख्या है, फिर भी विद्वानों ने निबंधो के स्थूल रूप से दो प्रकार के आधार खोज निकाले है – (१) विषय के आधार पर, (२) अभिव्यक्ति के आधार पर।

निर्मल वर्मा की भाषा पर की गई टिप्पणियाँ जैसा कि हमने कहा इस भाषा की प्रकृति को लक्ष्य कर की गई हैं।

इसीलिए उनके निबंधों, कहानी कला में नवीनता है, भाषा में नव–जातक की–सी सहजता और ताजगी है, उनका गद्य 'शुद्ध गद्य' है। ठेठ वाचक शब्द विशेषणहीन संज्ञाएँ, उपमारहित पद तथा स्वतन्त्र वाक्य। अलग–अलग करके देखने पर हर शब्द मामूली है, हर वाक्य साधारण है, लेकिन पूरा प्रभाव जबरदस्त है। गद्य की रूखई से भी वे स्थितियों के अनुसार से कवित्वपूर्ण प्रभाव उत्पन्न कर के जाते हैं।

क्या यह वह बिन्दु नहीं है जहाँ एक लेखक सौंदर्य की रचना एक अभिजात 'एस्थीट' की तरह नहीं करता, बल्कि स्वयं रचना सौंदर्य को एक नैतिक संघर्ष की यातना के असीम गौरव में बदल देता है ? यहाँ मैं अन्ना आख्यातोवा की एक कविता का उदाहरण देना चाहूँगा, जिसे उन्होंने अपने देश के आतंककाल में लिखा था –

"खामोश दोन खामोशी से बहती है
पीला चाँद घर में चला जाता है
वह टोपी तिरछी किये जाता है।
पीला चाँद छाया को देखता है
यह औरत बीमार है
यह औरत अकेली है
कब्र में पति
पुत्र कारागृह में
मेरे लिए प्रार्थना करो।"

इस कविता के बिम्ब अपने भीतर से खोद कर निकाले गये हैं। लेकिन जिस मिट्टी से उन्हे तराशा गया है, वह ओर कुछ नहीं बाहर को यथार्थ है, जो चारों तरफ फैला है–आकारहीन, भीमकाय, तर्क की दुनिया से परे। जिस तरह आदिम मनुष्य किसी चमत्कारिक घटना की स्मृति में एक दैवी शक्ति के गौरव में उसकी मूर्ति गढ़ लेता था, जो कालान्तर में एक देवता की तरह पूजी जाती थी, हालाँकि उस तात्कालिक घटना की स्मृति से उसका नाता कबका टूट चूका होता था।

निर्मल वर्मा के लिए भारतीय सभ्यता प्राचीन वटवृक्ष ही नहीं है, वह संस्कृति का 'भारतीय सभ्यता : तीसरा महाकाव्य' है। इस सभ्यता में सनातन परम्परओं के प्रवाह है जो इतिहास के थपेडों से आहत, घायल होकर भी जीवित हैं। इन परम्पराओंने हमारे पाँच हजार वर्ष के चिन्तन को 'ठहराव' नहीं दिया, प्रत्येक परिवर्तन के साथ गति दी है। 'आत्मा' में 'अन्य' को समाहित करने की शक्ति का नाम ही भारतीय सभ्यता है।

निर्मल वर्मा के सृजन और चिन्तन तल में काम करती हुई मनोभूमि का निर्माण चेकोस्लोवाकिया में बिताए गये वर्षो में एक खास ढंग से हुआ जहाँ वे १९५९ से १९६८ के बीच

कुछ कुछ अन्तराल के साथ आठ वर्ष रहे। ये आठ वर्ष चिन्तन के 'अष्ट सिद्धि' दाता रहे। उनके बड़े भाई प्रसिद्ध चित्रकार, कहानीकार रामकुमार वर्मा के चित्रों की एक प्रदर्शनी प्राग में लगी थी इसी दौरान रामकुमार की भेंट 'चेक ओरियंटन संस्थान' के डायरेक्टर डॉ. मीरास्लाव क्रासा से हुई।

निर्मल वर्मा की भाषा को प्रायः 'ऐन्द्रिक भाषा' कहा गया है। यह हिन्दी आलोचना का एक अकाल रूढ पद है जिसका इस्तेमाल प्रायः स्तुति अलंकार के रूप में होता है पर निर्मल वर्मा के सन्दर्भ में प्रसंगवश यह विशेषण अलग से भी विचारणीय है। भाषा–शिल्प की दृष्टि से निर्मल वर्मा अत्यन्त सफल रचनाकार है।

निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में तत्सम् शब्दों का भी प्राचुर्य है। ये शब्द हैं – विक्षिप्त, विकृत, स्तब्ध, प्रस्तर, मूर्ति, मुद्रा, अनिर्वचनीय, स्निग्ध, हस्तलिपि, निर्विकार, आतंकित, मन्त्रमुग्ध, रक्तहीन, कालातीत, निरीह, निर्निमेष, लावण्य, माधुर्य, सान्त्वना, कुण्ठा, स्मृति, आलोक, निस्पन्द, विसर्जन आदि।

देशज शब्द है – उलट–पुलट कर, झंझट, निपट, ठठरी, झोंक, अल्लम–गल्लम, चिप्पियाँ, डाँट–डपटकर, मनौती, थपथपाहट, उजाड़, छाँह, फड़फड़ाहट, निहारना, चीथड़ा, झिझोरना आदि।

निर्मल वर्मा ने अंग्रेजी के शब्दों का भरपूर प्रयोग किया है। स्क्कायर, पब, बार, टैरेस, कोरीडोर, पैवेलियन, चैनल, समिटी, लायब्रेरी, मैट्रन, किंडर–गार्डन, लेन, मेन गेट, स्कोप, कैंटीन, ड्राइवर, कालरबोन, कर्नाट प्लस, व्हाइट द स्टार्सटैल, द लास्ट सोल, बिलीयर्ड, टेबल लैम्प आदि अनेकानेक शब्द निर्मल वर्मा के कहानियाँ, उपन्यासों, निबंधों में मिल जाते हैं। स्पष्ट है कि निर्मल वर्मा ने अपने कथा साहित्य में अंग्रेजी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है, जो वातावरण के अनुकुल हो गया है।

अंग्रेजी वाक्य :

(१) इन द इवनिंग, आई शैल मीट नीलू।

(२) सीडी लेट अस सेलब्रेट द नाइट।

(३) कैन वी डू नथिंग फार द डेड एण्ड फार ए लौंग टाइम द आनसर हैड बिन नथिंग।

(४) जीसस, सैड, आई एम द लाइफ द वर्ल्ड ही दैर फोलोएथ सी शैल नाट इन डार्कनेस, बट शैल हैव द लाइठ आफ लाइफ।

अंग्रेजी शब्दों का हिन्दीकरण : बैंचों, पास्टों, रिकार्डो, ट्रना, स्टेशनों, केबिनों, पेन्शन, पाप्त, टूरिस्टों, म्यूजियसो, शिप्ट आदि।

उर्दू शब्द : निर्मल वर्माजी ने अपने निबंधों, उपन्यासों और कहानियों में उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया है। उर्दू और हिन्दी का नाता लम्बे अरसे से है। उर्दू भाषा के अनेक शब्द ज्यों के त्यों हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। हिन्दी और उर्दू हिन्दुस्तान में समान रूप से सम्मान की अधिकारी भाषाएँ हैं।

शैली–वैशिष्टय : संशिलष्ट शिल्प के सर्जक निर्मल वर्मा अपने कथा–साहित्य में सर्वथा नयी शैली के माध्यम से मनुष्य के अन्तर्मन की जटिलतम गुत्थियों की खोज करते चलते हैं। चेतन तथा अचेतन की मनोभूमि पर चलनेवाले निरन्तर संवाद की प्रक्रिया को अभिव्यक्ति देने का सामर्थ्य इनकी लेखकीय शैली में दिखाई देता है। एक प्रकार की काव्यात्मक रहस्यात्मकता इस शैली की विशेषता है। मानवीय सम्बन्धों के जाल में फँसे हुए मनुष्य मन की घुटन को अभिव्यक्त करने की अफलातून शक्ति इस शैली में है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि निर्मल वर्मा ने अपने कथा साहित्य में प्रत्येक संवेदना और अनुभूति को अत्यन्त विशिष्ट भाषा के माध्यम से मूर्तता प्रदान की है।

तृतीय अध्याय

निर्मल वर्मा के निबंधों का कथ्यगत विश्लेषण

- **यात्रा संस्मरण**

निर्मल वर्मा ने यात्रा वर्णन के रूप में 'चीड़ों पर चाँदनी' और 'हर बारिश' नामक दो ग्रन्थ हिन्दी साहित्य को दिये है। निर्मल का यह केवल यात्रा वर्णन ही नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और साहित्यिक यात्रा भी है।

'चीड़ों पर चाँदनी' : निर्मल वर्माजी एक लम्बे अरसे तक युरोप में रहे हैं। इस दौरान उन्होंने युरोप के सभी प्रमुख शहरों की यात्रा की है। इन्हीं यात्राओं के बारह संस्मरण 'चीड़ों पर चाँदनी' के शीर्षक से पुस्तकाकार हुए है। पुस्तक तीन खण्डों 'उतरी रोशनियों की ओर', 'चीड़ों पर चाँदनी' व 'देहरी के बाहर' में विभाजित है। ये निबंध हमें युरोपीय शहरों की जानकारी के साथ वहाँ के निवासियों के स्वभाव व प्रकृति के बारे में भी जानकारी देते हैं।

पुस्तक के दूसरे खण्ड 'चीड़ों पर चाँदनी' में पाँच संस्मरण है। 'लिदीत्से : एक संस्मरण' फासिस्ट जर्मन क्रुरत और अत्याचारों की जिंदा मिसाल है। लिदीत्से एक छोटा शहर था। वहाँ किसी जर्मन अफसर को किसी ने गोली मार दी। बदला लेने के लिए गेस्टापों पुलिस ने पूरे शहर को घेर कर आग के हवाले कर दिया। आज वर्षो बाद भी लिदीत्से में जर्मन क्रुरता व अत्याचारों के निशान दिखाय देते है।

पुस्तक के तीसरे खण्ड 'देहरी के बाहर' में तीन संस्मरण है। 'लैक्सनेस : एक इन्टरव्यू' में साहित्य में नोबल पुरस्कार प्राप्त आइसलैन्ड के लेखक होलदार विलियम लैक्सनेस के साथ लेखक के साक्षात्कार का वर्णन है।

'हर बारिश में' : 'हर बारिश में' निर्मल वर्मा के संस्मरणात्मक यात्रा निबंध का संग्रह है। पुस्तक में लेखक की युरोप यात्रा के दौरान अनुभवों पर आधारित ग्यारह निबंध संकलित है। पुस्तक के प्रारंभिक निबंध 'दो संस्कृतियों के बीच', 'युरोप में भारतीय' व 'अंग्रेजो की खोज में' ऐसे निबंध है जो युरोप के प्रति भारतीयों की परम्परिक सोच को बदलते है। 'युरोप में भारतीय' निबंध में लेखक ने बताया है कि युरोप को समझने के लिए हमें इंग्लैन्द या 'अंग्रेजी की खिड़की' से झाँकना बंद करना होगा।

'अंधेरे में एक चीख' निबंध में लेखक ने 'नयी कहानी' के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं। लेखक ने 'नयी कहानी' में तनाव की अनिवार्यता को रेखांकित करते हुए उसे 'टोटल टेरर' की स्थिति मानते हुए 'अंधेरे में एक चिख' बताया है और बताया है कि किस तरह प्राग रंगमंच ने परम्परा को आधुनिकता से जोड़ा है।

'प्राग एक स्वप्न' और 'अंधेरे के खिलाफ' संग्रह के महत्त्वपूर्ण निबंध है। इन निबंधों में प्राग पर हुए सोवियत आक्रमण के समय सोवियत विश्वासघात से उत्पन्न क्रोध व क्षोभ का चित्रण हुआ है।

'परम्परा और प्रतिबद्धता : एक बातचीत' निबंध कुछ चैक लेखकों से हुई बातचीत पर आधारित है। इसमें परम्परा से लेखक का जुड़ाव और लेखकिय प्रतिबद्धता जैसे सवालों पर विचार किया गया है।

- **निबंध संग्रह :**

'शब्द और स्मृति' : कथाकार होने के साथ–साथ निर्मल वर्मा गहरे चिंतक भी हैं। उनके चिंतन का क्षेत्र सनातन भारतीय संस्कृति से लेकर आधुनिक मानव सभ्यता तक फैला है। निर्मलजी की चिंतन कला और साहित्य के सवालों के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति की सनातनता

और आधुनिक मानवीय सभ्यता के अन्तर्विरोधों से जुड़ी है। उनकी इसी चिंतन के कारण आलोचक अशोक वाजपेयी उन्हें देश के श्रेष्ठ बुद्धिजीवियों में गिनते हैं।

'शब्द और स्मृति' में स्मृति की आन्तरिक संपन्नता को रेखांकित करते हुए वे बताते हैं कि स्मृति ही किसी रचना का आधार बनती है। हालाँकि अनुभव इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन अनुभव स्मृति से जुड़कर ही कहानियाँ बनाते हैं।

'कला का जोखिम' : 'कला का जोखिम' निर्मल के निबंध संग्रह की दूसरी पुस्तक है, जो 'शब्द और स्मृति' के बाद प्रकाशित हुई थी। लगभग बीस वर्ष बाद इसका नया संस्करण है। नये संस्मरण में मैंने केवल भाषा के कुछ संशोधन किए है, विशेषकर उन लेखों में, जिनका अनुवाद अंग्रेजी से किया गया था। अपनी कुछ मान्यताओं को आज इतने बरसों बाद में कुछ अन्य रूप में प्रस्तुत कर सकता था, किन्तु सन्निहित विश्वास सही है, जिन से उत्प्रेरित होकर मैंने ये निबंध लिखे थे। पुस्तक में संग्रहीत ये निबंध किसी न किसी कोने से बराबर एक केन्द्रीय बिन्दु को छूने का प्रयास करते हैं।

'ढ़लान से उतरते हुए' : 'ढ़लान से उतरते हुए' निर्मल वर्मा के वैचारिक निबंधों का संग्रह है। कुछ साल पहले निर्मल के दो निबंध संग्रह आये थे 'शब्द और स्मृति' व 'कला का जोखिम' ये दोनों निर्मल के चिंतन प्रधान निबंधों का संग्रह थे। 'ढलान से उतरते हुए' निबंधों की उसी श्रृंखला की तीसरी कड़ी है।

'कहानी : एक शुद्ध विद्या' में अनुभव की प्रकृति को महत्त्व दिया गया है। निबंध मे बताया गया है कि लेखक अपने अनुभव का फर्म नहीं चुनता, अनुभव एक खास फार्म में ही लेखक के भीतर उदित होता है। 'कलाकृति और आलोचना की मर्यादा' में आलोचना और यथार्थ के सवालों के अनेक कोणों से देखा गया है।

'भारत और युरोप : प्रतिश्रुति के क्षेत्र' : 'भारत और युरोप : प्रतिश्रति के क्षेत्र' वर्माजी के आलोचनात्मक निबंधों का संग्रह हैं। इन निबंधों में निर्मलजी ने समाज, साहित्य, कला व संस्कृति जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर चिंतन प्रस्तुत किया और बताया है कि कला व साहित्य के सवालों को समाज व संस्कृति से अलग रखकर नहीं समझा जा सकता।

पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित है। इसमें कुल ग्यारह निबंध संकलित है। पहले खण्ड में चार निबंध संकलित है। 'भारतीय संस्कृति और राष्ट्रो' में स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्र की अवधारणा युरोपीय देन हैं।

'शताब्दी के ढलते वर्षो में' : 'शताब्दी के ढलते वर्षो में' निर्मल वर्मा का २९ निबंधो का संकलन है। ये निबंध बहुआयामी है। निबंध एक ओर जहाँ कला और साहित्य पर चर्चा करते हैं वहीं दूसरी ओर समाज, संस्कृति और आधुनिकता पर विचार करते हैं। साथ ही ये विभिन्न रचनाकारों का रचनात्मक क्षमताओं पर भी विचार करते हैं।

'दूसरे शब्दों में' : 'दूसरे शब्दों में' वर्माजी का एक ओर निबंध संग्रह है। खुद निर्मल के अनुसार पुस्तक में संकलित लेख व वक्तव्य हमारे समय के तात्कालिक दबावों के तहत लिखे गये हैं। यह संग्रह चार खण्डों में विभाजित है। पहला खण्ड 'सृजन का प्रवेश' में आठ लेख हैं। जिन में लेखक ने रचनाकार का अपने परिवेश, उसके समाज व इतिहास से सम्बन्धों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। दूसरे खण्ड में 'अस्मिता की खोज' के तहत चार लेख संकलित हैं। तीसरे खण्ड में अपने आसपास के परिवेश और परिस्थितियों पर लेखक की टिप्पणियाँ हैं। आखिर खण्ड लेखक के साक्षात्कारों का है। जिसमें अलग–अलग व्यक्तियों द्वारा लिए गए लेखक के नौ साक्षात्कार है।

'आदि, अन्त और आरम्भ' : यह पुस्तक चार खण्डों में विभाजित हैं। पहले खण्ड में आठ निबंध संग्रहित है। पहले खण्ड में 'भारत एक स्वप्न' में आठ निबंध है। जिनमें 'मेरे लिए भारतीय होने का अर्थ' निर्मल की भावना देशप्रेम के लिए प्रबल है। चूँकि आजादी को

दिलानेवाले गाँधीजी महान थे और लेखक आजादी से मुक्त होकर भी हम कितने स्वतंत्र हैं उस पर लेखक ने विचार किया है। निर्मलजी का मानना है कि देश के प्रति गहरा प्रेम, संस्कृति और परंपरा बचाये रखना भूल चुका है। लेखक हमें याद दिलाते है कि हमें देश को सुखाना नहीं पर बचाना है।

'तीन एकान्त' : इस पुस्तक में निर्मल वर्मा की उन कहानियों को संकलित किया गया है, जिनका नाट्य मंचन किया जा चुका है। इस पुस्तक में 'धूप का एक टुकडा', 'डेढ इँच ऊपर' और 'वीकएन्ड' कहानियाँ संकलित हैं।

'मेरी प्रिय कहानियाँ' : यह एक संकलित कहानी संग्रह है। इस संकलन में निर्मल वर्मा की सात कहानियाँ संकलित की गई है।

'प्रतिनिधि कहानियाँ' : निर्मलजी के सभी कहानी संग्रहो में से चयन कर उनकी प्रतिनिधि कहानियों का संकलन राजकमल प्रकाशन की ओर से प्रकाशित किया गया है।

'दूसरी दुनिया' : यह पुस्तक निर्मल वर्मा के लेखकीय व्यक्तित्व का प्रतिनिधि संकलन है। पुस्तक में निर्मल वर्मा की प्रतिनिधि कहानियाँ, निबंधों, यात्रा संस्मरणों व डायरी के अंशों का संचयन है।

अनुवाद : करेल चापेक चैक कथाकार हैं। उनकी कहानियों में व्यक्ति की एकाकी अनुभूतियों को उतारा गया है।

चतुर्थ अध्याय

हिन्दी निबंध साहित्य में निर्मल वर्मा का स्थान

हिन्दी साहित्य में निबंध का सूत्रपात राष्ट्रीय जागरण के उषाकाल भारतेन्दु के समय में हुआ। एक तो अब गद्य साहित्य का विकास हो चुका था और दूसरे मुद्रण यंत्र तथा समाचार पत्रों

के प्रचलन ने साहित्य के इस अंग को प्रोत्साहन दिया। इसके अतिरिक्त भारतेन्दु युग के साहित्यकार पर विविधमुखी दायित्व था जिसकी पूर्ति गद्य साहित्य के अन्य अंगों की अपेक्षा निबंध के द्वारा सहज तथा सबल रूप में हो सकती थी। तत्कालीन सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना के इस युग में निबन्ध साहित्य को (१) भारतेन्दु युग (२) द्विवेदी युग (३) शुक्ल युग तथा (४) शुक्लोत्तर युग में विभाजित करके क्रमात्मक रूप में इनका अध्ययन किया जायेगा।

- **भारतेन्दु युग :**

हम हिन्दी के प्रमुख निबंधकारों के कृतित्व और उनकी उपलब्धियों की समीक्षा प्रस्तुत करेंगे, जिससे युगों के क्रम में इस विधा की प्रगति के चरण स्पष्ट होते चलेंगे। इस संदर्भ में अवश्य ही सबसे पहले भारतेन्दु युग आता है। भारतेन्दु युग में युग और ऋतु क्रांति और संक्रांति दोनों के प्रेरक स्वर हैं। भारतेन्दु युग हिन्दी के लिए समस्या और समाधान का युग था। उर्दू की बढ़ती बाढ़ एवम् संस्कृत के निष्प्राण और अप्रचलित शब्दों के व्यवहार की कट्टरता से हिन्दी की रक्षा और साथ ही हिन्दी को राष्ट्र भाषा, देशी भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की समस्या थी। भाषा की समस्या के अतिरिक्त राष्ट्र की राजनीतिक, सामाजिक ग्लानि की चेतना भी अभिव्यक्ति के लिए आकुल थी। भारतेन्दु अपने युग की इस चरमोत्कंठा के प्रवर्तक, पोषक और प्रतीक पुरुष थे।

इस युग के तीन प्रतिनिधि निबंधकार है, बालकृष्ण भट्ट, भारतेन्दु हरिश्चंद्र एवम् प्रतापनारायण मिश्र। हम इनके कृतित्व एवम् इनकी उपलब्धियों पर अलग–अलग विचार करेंगें।

बालकृष्ण भट्ट :

भट्टजी के निबंध (१) गल्प (२) विडंबना (३) शब्द विनोद और (४) उपहास की पद्धति पर रचित है। इसलिए कहा गया है कि इनमें वैयक्तिकता या दायित्वविहीन वार्ता सुख उतना नहीं, जितना विषय को लेकर किया गया।

विडंबना की विधि, पत्नीस्तव, कौआ परी, आशिकतना में अपनाई गई है। 'चली सो चली', 'चलन', 'नहीं' आदि शब्द विनोद के नमूने हैं। 'नई सभ्यता की बानगी', 'अकिल अजीरन रोग', 'इंगलिस पढै सो बाबू होय' आदि में उपहास की परिपाटी लक्षित होती है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र :

भारतेन्दुजी की कल्पना किसी भी विषय का ताना–बाना बुनने चार प्रकार से काम करती है –

(१) **साम्यान्वेषण :** किसी वस्तु के भिन्न–भिनन पहलूओं का पुराणों या जनश्रुतियों में आए प्रसंगों से साम्य स्थापित करना।

(२) **उत्प्रेक्षा :** किसी वस्तु को भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण से देखकर उसे तत्कालीन या दोनों प्रकार के तथ्यों के रूप में प्रस्तुत करना।

(३) **मिथ्या कल्पना या मिथक उद्‌भावना :** स्वामी दयानंद सरस्वती और श्री केशवचंद्र सेन को लेकर स्वर्ग में उठे विवाद भी उदाहरण है।

(४) **अक्षरशः अनुकृति :** 'पाँचवे (चूसा) पैगंब' के आहवान और 'कानून ताजीरात शौहर' विडंबना की ऐसी रीति है, जो देखने में निबंध सी भले ही न लगे, उसमें पल्ली उडानेवाले व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है।

प्रताप नारायण मिश्र :

श्री प्रताप नारायण मिश्र ऊच्च कोटी के निबंधकार थे। वे मूलतः पत्रकार थे। पत्रकारिता की पूरी छाप उनकी कृतियों पर है, कुछ न कुछ कहने की त्वरा, पाठकों के मनोरंजन का मसाला एकत्रित करने की होड, शब्दों, उक्तियों और परंपरागत अर्थो को नया कलेवर, नई दिशा देने का मानसिक आयास तथा प्रसंगो और स्त्रोतों की विविधता। निबंध की सैद्धांतिक

स्वीकृति और पत्रकारिता की दैनिक चुनौती किसी लेखक को तीन में से किसी एक या तीनों दिशाओं में ले जा सकती है। ये दिशाएँ हैं – (१) प्रतिक्रियात्मक (२) उपस्थापनात्मक (३) अपक्र्तनात्मक।

- ## महावीरप्रसाद द्विवेदी युग :

इस युग की समस्त साहित्य चेतना महावीरप्रसाद द्विवेदी में समाहित है, उनका सबसे पहला कार्य है भाषा का संस्कार तथा परिष्कर। उन्होंने भाषा के व्याकरण सम्मत प्रयोग तथा हिन्दी विरामचिन्हों के उपयोग पर अत्यधिक बल दिया। निबंधकार महावीरप्रसाद द्विवेदी का महत्त्व ऐतिहासिक है, साहित्यिक नहीं। उन्होंने पाश्चात्य लेखकों के ज्ञान को अर्जित करके अपने निबंधों के द्वारा हिन्दी पाठकों का ज्ञानवर्धन किया।

माधवप्रसाद मिश्र के निबंध भावनापूर्ण हैं, उनमें सरसता, माधुर्य है। उनके त्यौहारों और तीर्थस्थानों पर लिखे गये निबंध विद्वतापूर्ण और मार्मिक हैं। इन्हों ने 'सत्य' जैसे विषयों पर गम्भीर शैली में लिखा है।

बाबू श्यामसुन्दर एक उच्च कोटि के आलोचक होने के साथ–साथ सफल निबंधकार भी थे। उन्होंने प्रायः गम्भीर आलोचनात्मक विषयों पर लेख लिखें हैं, जैसे 'भारतीय साहित्य की विशेषताएँ', 'समाज और साहित्य', 'हमारे साहित्योदय की प्राचीन कथा', 'कर्तव्य और सभ्यता' आदि।

- ## आचार्य रामचन्द्र शुक्ल युग :

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के साथ हिन्दी निबंध के साथ हिन्दी निबंध के आधुनिक युग का आरंभ होता है। शुक्ल के गम्भीर चिन्तनप्रधान निबंधों में साहित्य को बहुमूल्य निधि दी। उनके निबंधों में विचारों की वह गढ–गुम्फिल परम्परा मिलती है, जिससे पाठक की बुद्धि उत्तेजित

होकर नई विचार पद्धति पर दौड़ पड़ती है। शुक्लजी के निबंधों में विषयनिष्ठता, ससम्बद्धता और तारतम्यता का निर्वाह किया गया है, किन्तु शुक्लजी के आदर्श का आगे के सभी लेखकों ने पालन नहीं किया। मस्तिष्क के स्वच्छन्द शिथिल प्रवाह के रूप में ही निबंध की मान्यता को अनेक लेखकों ने ग्रहण किया और व्यक्तिपरक निबंधों का सृजन किया। मोंतेन की मान्यता निबंधकारों को प्रेरित करती रही है, क्योंकि निबंध ही वह साहित्य रूप है, जिसमें लेखक अपनी रूचि, भावना और विचारों की स्वच्छन्द अभिव्यक्ति कर सकता है।

इस युग के अन्य निबंधकारों में गुलाबराय, सियारामशरण गुप्त, शिवपूजन सहाय, लक्ष्मीकांत झा इत्यादि। गुलाबराय के प्रसिद्ध संग्रह है – 'मेरी असफलताएँ' में कई निबंध है। श्री सियारामशरण गुप्त हिन्दी के उन निबंधकारों में हैं, जिन्हें इस विधा की समझ और पकड़ है। लक्ष्मीकांत झा अंग्रेजी निबंधों का गहरा अध्ययन करके अपना आदर्श स्थिर किया है। हिन्दी में यह उनका नया प्रयास ही कहा जायेगा। 'मैंने कहा' शीर्षक निबंध संग्रह की भूमिका में इसका दावा भी किया है।

- **वर्तमान युग :**

इस युग के निबंधकारों में हजारीप्रसाद द्विवेदी, दिवाकरप्रसाद, विद्यार्थी, प्रभाकर माचवे, भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव', देवेन्द्रनाथ शर्मा, विद्यानिवास मिश्र, नामवर सिंह, रामेश्वरनाथ तिवारी, कुबेरनाथ राय आदि। निबंध के विकासक्रम में यह युग सबसे महत्त्वपूर्ण है। विश्व विद्यालय का शिक्षा और आधुनिक चेतना का यह युग ऐसे निबंधकारों का है, जो पाश्चात्य निबंधों के आदर्श और शिल्प से परिचित ही नहीं थे, उच्चतरीय तथा प्रामाणिक निबंधों के सृजन के और विकास की दिशा में सचेष्ट रहे हैं। हिन्दी को विश्व विद्यालयी पाठयक्रम के स्तर पर प्रतिष्ठित करने का जो अभियान पंड़ित रामचन्द्र शुक्ल, श्यामसुन्दर दास आदि के द्वारा चलाया गया था, उससे निबंधकारों की स्पर्धा में हिन्दी के युग निर्माणवाला भाव भी सन्निविष्ट हो गया।

निर्मल वर्मा का स्थान :

निर्मल वर्मा अपने रचना कर्म में सृजनात्मकता और बौद्धिक अर्न्तयात्राओं तथा उसके रचनागत सरोकारों और उदेश्यों का, उसकी लेखकीय आस्थाओं और प्रतिबद्धताओं का प्रामाणिक दस्तावेज प्रस्तुत करने चलते हैं। वे बौद्धिक दृष्टि से कितने जागरूक रहे हैं, समकालीन प्रश्नों और समस्याओं के साथ जूझते रहते हैं, इसका आभास उनकी रचनाओं में स्वाभाविक रूप से मिल जाता है। इस शताब्दी में जब आत्मीयता, दया, संवेदना, प्रेम और साहचर्य का भूगोल विस्मृति का शिकार हुआ है, ऐसे में निर्मल वर्मा ने अपनी अदम्य साहित्यधर्मी जिजीविषा के चलते सभ्यता के पुनरान्वेषण में साहित्य का उत्स ढूँढा है।

वे उन गिने–चुने भारतीय लेखकों में से एक हैं, जिनका लेखन भारतीय परम्परा के प्रतयाख्यान का पर्याय बन चुका है। चीजों और स्थितियों को खोलनेवाली, उनकी चीर फाड करनेवाली पारदर्शीत वृत्ति उनकी रचनाओं को अलग मुकाम पर खड़ा कर देती है। उन्होंने स्वयं कहा है कि, “हर लेखक की शुरूआत में उसका अन्त छिपा रहता है और इन दोनों के बीच वह स्वयं है, पराजित भी, विजेता भी। यातना भोगता हुआ, लेकिन उस यातना का द्रष्ट भी एक ऊबट जमीन, जिस पर उसकी समूची दुनिया बसी है।”

निर्मल वर्मा का साहित्य स्मृति और कल्पना को अनुभवों के बारीक रेशे से बाँधकर ऐसा मायालोक गढ़ता है, जिसमें एक धीर और लम्बी प्रतीक्षा, उदासी और विस्मय, मृत्यु और भय की लगातार उपस्थिति तथा निरन्तर नष्ट हो रहे मनुष्य की मानसिक विश्रान्ति को एक बड़ा अभिप्राय हासिल होता है।

निर्मल वर्मा स्वयं प्रतिनिधि रूप में नवशिक्षित युवकों के प्रतीक है। हमारा हर युवा पश्चिमी जीवन, सभ्यता, पश्चिमी भौतिकवाद के चकाचौंध से चुम्बकीय ढंग से युरोप और अमेरिका की तरफ भागता या आकर्षित होता रहा पर प्रत्यक्ष उन देशों पर पहूँचने पर

अतिबौद्धिकता, अति आधुनिकता, संवेदनाशून्य जीवन शैली और अति उन्मुक्तता से वह पहली बार परेशान हुआ। यह उस पर पहला सांस्कृतिक रियेक्शन था।

निर्मल वर्मा जैसे आधुनिक मेधा सम्पन्न, संवेदनशील लेखक भारतीय और पाश्चात्य चिन्तन से बँधा था वह काल–समय के साथ अपने काल के ठीक था पर नए पुरानी विचारधाराओं के बीच संघर्ष करता हुआ आधुनिक मानव केवल वेदान्त और शुद्धाद्वैतवाद और मधुर भक्ति में जी नहीं सकता।

उपसंहार :

भारतेन्दु युग के निबंधकार प्रायः पत्र–पत्रिकाओं और समाज के प्रति अपने दायित्व से पूर्णतः परिचित और सजग लेखक थे। इसी कारण उनके निबंध इन्हीं समस्याओं से सम्बन्धित रहते थे। उन्हें जनता में नई युग चेतना का प्रसार करना था। वस्तुतः भारतेन्दु युग के बाद आज तक हिन्दी निबंधों में ऐसी सरलता, सहजता और आत्मीयता फिर कभी न आ पाई।

वर्तमान स्थिति यह है कि हिन्दी में निबंध साहित्य की अधिक चर्चा नहीं होती। जब हम निबंध की बात करने बैठते हैं तो 'चिन्तामणि', 'अशोक के फूल' इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दी का नया निबंध साहित्य चर्चा का विषय नहीं बन पाता।

निर्मल वर्माजी ने मुख्यतः अपने निबंध, कहानी, उपन्यास में अध्यात्म मूल्य को सर्वोत्तपरि स्थान दिया है। वे हिन्दी के चिन्तनपरक लेखकों में से एक थे जो भारतीय संस्कृति, सभ्यता और उसकी विरासत से जुड़े हुए थे। हिन्दी के महत्त्वपूर्ण लेखकों में से एक थे जिन्होंने हिन्दी लेखन का आर्न्तराष्ट्रीय स्तर स्थापित किया है।

संदर्भ सूची

(१) आधार ग्रंथ :

१. अवलोकन – निर्मल वर्मा – सं. नंदकिशोर आचार्य – वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन् २००३

२. आदि, अन्त और आरंभ – निर्मल वर्मा – भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, सन् २०१०

३. एक चिथडा सुख पेपर वैक्स में – राजकमल, सन् १९८९

४. कथाकार निर्मल वर्मा दृष्टि और सृष्टि – डॉ. आलोकराय – प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, सन् २०११

५. कथाकार निर्मल वर्मा – नरेन्द्र इष्टवाल

६. कथापुरुष निर्मल वर्मा – मदन सोनी – देवी प्रकाशन, बीकानेर, सन् २०००

७. कला का जोखिम – निर्मल वर्मा – राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन् २००१

८. कहानीकार निर्मल वर्मा और मधुराय तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. मधुकर पाडवी – ज्ञान प्रकाशक, कानपुर, सन् २००४

९. ढ़लान से उतरते हुए – निर्मल वर्मा – राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन् १९८८

१०. निर्मल वर्मा के साहित्य में नारी – डॉ. ठाकुर विजय सिंह – समता प्रकाशन, कानपुर, सन् २००७

११. निर्मल वर्मा और कृष्णदत्त उत्तर औपनिवेशक विमर्श – पालीवाल – भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, सन् २०१२

१२. निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में जीवन मूल्य – डॉ. प्रमोद पाटील – विद्या प्रकाशन, कानपुर, सन् २०१२

१३. निर्मल वर्मा का कथा साहित्य – डॉ. रघुनाथ शिरगाँवकर – सन् २०१२

१४. निर्मल वर्मा – सं. अशोक वाजपेयी – राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन् १९९०

१५. परिन्दे – निर्मल वर्मा – राजकमल प्रकाशन, सन् १९९९

१६. भारत और युरोप प्रतिश्रुति के क्षेत्र – निर्मल वर्मा – राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन् २००१

१७. रामवृक्षबेनीपुरी व्यक्तित्व एवम् कृतित्व – कन्हैयालालबी चौहान – प्रियकान्त प्रकाशन, अहमदाबाद, सन् २००१

१८. शब्द और स्मृति – निर्मल वर्मा – भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, सन् २०११

१९. सर्जन पथ के सहयात्री – निर्मल वर्मा – भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, सन् २००८

२०. साहित्य चिन्तन समीक्षा और शोध – डॉ. मधुकर पाडवी – राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सन् २०१०

२१. साहित्य का आत्म–सत्य – निर्मल वर्मा –भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, सन् २०१०

२२. हिन्दी निबंधों का शैलीगत अध्ययन – मु. ब. शाह – नहेरू नगर, कानपुर, सन् १९९३

२३. हिन्दी साहित्य का इतिहास – माधव सोनटकके – सन् २०००

२४. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल – सन् १९६८

२५. हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार – डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त – सन् १९३६

२६. हिन्दी साहित्य का इतिहास का विवेचनात्मक इतिहास – राजनाथ शर्मा – सन् १९८६

(२) सहायक ग्रंथ :

१. गुजरात का समकालीन हिन्दी साहित्य – डॉ. रघुनाथ भट्ट – हिन्दी साहित्य परिषद, अहमदाबाद, २००३

२. भारतीय एवम् पश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत –

३. हिन्दी निबंध उद्‌भव और विकास – डॉ. हेतु भारद्वाज, डॉ. सुमनलता – पंचशील प्रकाशन, सन् २००७

(३) पत्र–पत्रिका :

१. जनसत्ता दैनिक अखबार (सबरंग)

२. पत्रकार निर्मल वर्मा के पत्र

३. प्रकाशन समाचार राजकमल प्रकाशन दिल्ली

स्थल : सूरत,
दिनांक : –०२–२०१५

(अरविंद डी. वसावा)
अध्येता

(डॉ. अर्जुन के. तडवी)
मार्गदर्शक